UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180365
UNIVERSAL
LIBRARY

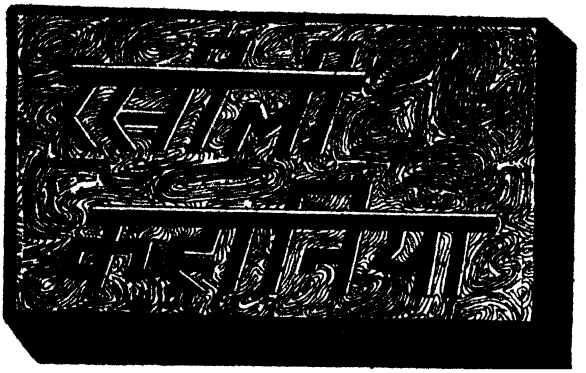

प्रकाशक

दक्षिण भारत हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

त्यागरायनगर, मद्रास

OUP—552—7-7-66—10,000

P. G.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83.1 D13R Accession No. H678

Author दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा

Title रसीली कहानियाँ

This book should be returned on or before the date last marked below.

हिन्दी प्रचार पुस्तकमाला, पुष्प—५९.

दसवाँ संस्करण तक—९०
ग्यारहवाँ " —५०

हिन्दुस्तानी प्रचार प्रेस, मद्रास

प्रकाशकों की बात

संसार में कथा-कहानियाँ अपना ख़ास स्थान रखती हैं। उनसे मनोरंजन के साथ अच्छी नीति की शिक्षा भी मिलती है।

संसार के साहित्य में हितोपदेश, पंचतंत्र और ईसप की कहानियाँ बहुत लोकप्रिय हैं। परन्तु उनमें पशु-पक्षियों के बीच बातचीत करवायी गयी है। बड़े-बड़े राजनीति, समाजनीति तथा लोकनीति के सवाल हल किये गये हैं; परन्तु इनको पढ़ते वक़्त बालक के हृदय में पहला प्रश्न उठता है कि क्या कौआ बातचीत करता है? क्या चूहा मित्र-भेद को समझ सकता है, आदि!

आजकल जब कि बाल-मनोविज्ञान इतना उन्नत हो चुका है, उन कहानियों से बालकों के हृदय की गुत्थियाँ खुलती नहीं, परन्तु और भी उलझ जाती हैं। इस कठिनाई का अनुभव कर प्रस्तुत पुस्तक तैयार की गयी है।

सूची

पाठ			पृष्ठ
१.	कपड़ों का आदर	... ...	१
२.	भाई का प्रेम	... ...	४
३.	मेहनत का फल	....	७
४.	सूरज क्यों नहीं निकला ?	... .	१४
५.	दया और लक्ष्मी	... ...	१८
६.	सच बोलनेवाला चोर	....	२२
७.	सच्चा न्याय	....	२६
८.	माँ की सेवा	... ...	३०
९.	दूध में पानी	....	३५
१०.	बखशीश माँगने की सज़ा	... ...	३९
११.	सोने की थाली	... ...	४३
१२.	लालच का फल	... .	४७
१३.	मुदलियार की उदारता	... ...	५१
१४.	तीन वर	... ...	५५
१५.	होनहार	... ..	६३
१६.	पिता का प्रेम	... ..	६९
१७.	लोभी दादा	... ...	७४

कपड़ों का आदर

पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर बंगाल के एक नामी आदमी थे। अमीर-ग़रीब, राजा-रईस—सब उनका आदर करते थे। उनकी सलाह के बिना कोई बड़ा काम न होता था। वे बहुत बड़े विद्वान भी थे। इसलिए लोग उनको 'विद्यासागर' यानी 'विद्या का समुद्र' कहते थे। पर वे बहुत सादा रहते थे। हमेशा मोटी धोती, मोटा कुर्ता और चप्पल पहनकर आते-जाते थे। वे देखने में बहुत सीधे-सादे जान पड़ते थे।

एक बार बंगाल के एक बड़े धनी आदमी ने उनको भोज दिया। उस भोज में बहुत से राजा-महाराजा और रईस लोग बुलाये गये। बड़े ठाट-बाट से तैयारी की गयी। अच्छी-अच्छी सवारियों में बैठकर मेहमान लोग भोज खाने आये। पं० ईश्वरचंद्र विद्यासागर रोज़ की तरह मोटी धोती और मोटा कुर्ता पहनकर

अमीर के घर पहुँचे। दरबान ने विद्यासागर को उस भेष में देखकर समझा कि कोई गरीब ब्राह्मण बिना बुलाये खाने के लिए चला आया है। इसलिए उसने उनको जाने न दिया और वे घर लौट गये।

विद्यासागर के न आने से भोज रुक गया। सभी मेहमान लोग आ चुके थे। सिर्फ़ विद्यासागर का कहीं पता नहीं था। मेज़बान ने फ़ौरन गाड़ी भेजकर विद्यासागर को बुलाया। इस बार विद्यासागर ख़ूब

अच्छे कपड़े पहनकर आये। लोग, जो हमेशा विद्यासागर को सादे कपड़ों में देखते थे, यह देखकर ताज्जुब करने लगे।

जब भोजन परोसा गया और सब लोग खाने लगे तब विद्यासागर चुप बैठे हुए थे। वे बार-बार अपने कपड़ों से कह रहे थे—"तुम खाओ; अजी, खाते क्यों नहीं!" यह देखकर लोगों को और भी ताज्जुब हुआ। मेज़बान ने विद्यासागर के पास जाकर पूछा—"पंडितजी,

आप यह क्या कर रहे हैं ? आप खुद न खाकर कपड़ों से खाने को कह रहे हैं। इसका क्या मतलब ?" उसने

विद्यासागर ने जवाब दिया "मैं जब सादे कपड़े पहनकर आया था तब वापस कर दिया गया। अब अच्छे कपड़ों की ही वजह से अंदर आया हूँ। यह भोज तो कपड़ों के लिए है। इसलिए मैं उन्हीं से खाने को कह रहा हूँ।"

विद्यासागर की बात सुनकर अमीर आदमी को बड़ी शरम आयी और उसने दरबान की बेवकूफ़ी के लिए पंडितजी से माफ़ी माँगी।"

भाई का प्रेम

किसी गाँव में एक किसान रहता था। उसके दो बेटे थे। बाप के मरने के बाद दोनों भाई अलग-अलग हो गये। किसान के पास दो-चार एकड़ ज़मीन थी। लड़कों ने उसे भी बांट लिया। दोनों अलग-अलग घरों में रहने लगे।

अच्छेत का महीना था। खेत कट चुके थे। खलिहानों विधामल के ढेर लगे थे। दोनों भाई अलग-अलग त थे, तो भी दोनों में बड़ा प्रेम था। दोनों एक दूसरे की भलाई की बात सोचा करते थे।

बड़ा भाई जब खा-पीकर सोने गया तब वह सोचने लगा—मेरा छोटा भाई अकेला है। उसको सारी गृहस्थी अकेले सँभालनी पड़ती है। मेरे तो दो तीन बच्चे हैं। वे भी गृहस्थी में कुछ-न-कुछ मदद देते ही हैं। इसलिए छोटे भाई की कुछ सहायता करनी चाहिए। यह सोचकर वह उठा और खलिहान में गया। वहाँ दोनों भाइयों के अनाज के ढेर पास ही पास थे। बड़े भाई ने अपने ढेर से दस गठरी अनाज उठाकर अपने छोटे भाई के ढेर में रख दिया और घर चला आया।

उधर छोटा भाई भी अपने घर में बैठा हुआ यही सोच रहा था—मैं तो अकेला हूँ। जहाँ चाहूँ जा सकता हूँ। अगर खेती से फ़ायदा न होगा तो शहर में जाकर नौकरी कर लूँगा। लेकिन भैया बाल-बच्चेवाले आदमी

हैं। दो चार एकड़ खेत की पैदावार उनके लिए काफ़ी न होगी। उनकी कुछ मदद करनी चाहिए' यह सोचकर वह बड़े तड़के उठा। खलिहान में गया और अपने ढेर में से दस गठरी अनाज उठाकर अपने बड़े भाई के ढेर में रख दिया।

दूसरे दिन सुबह होने पर जब दोनों ने अपने अपने ढेर देखे तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। दोनों के ढेर पहले के जैसे थे। बड़े भाई ने छोटे भाई से पूछा—मैंने कल रात को अपने ढेर में से दस गठरी अनाज तुम्हारे ढेर में रख दिया था। वह फिर मेरे ढेर में कैसे चला आया? छोटे भाई ने कहा—मैंने समझा कि आप बाल-बच्चेवाले आदमी हैं। मैं तो अकेला हूँ। इतना अनाज लेकर क्या करूँगा। इसलिए अपने ढेर में से दस गठरी अनाज उठाकर आपके ढेर में रख दिया।

छोटे भाई की बात सुनकर बड़े भाई ने उसे अपने गले से लगा लिया। उस दिन से दोनों भाई एक ही

साथ रहने लगे। उन दोनों के प्रेम की कहानी सुनकर लोग उनकी बड़ी तारीफ़ करने लगे।

मेहनत का फल

माली रामदीन अपने मालिक के बगीचे में मिट्टी खोद रहा था। इतने में पीछे से जूतों की 'चर्र, मर्र' आवाज़ सुनायी दी। पीछे फिरकर देखा तो एक साहब कोट, हैट, बूट और चश्मा पहने चले आ रहे हैं। उसने उठकर सलाम किया।

साहब ने पूछा—तुम्हीं रामदीन हो?

रामदीन—जी हाँ सरकार, मेरा ही नाम रामदीन है।

साहब—क्या तुम आज से दस बरस पहले राजा रामपाल सिंह के यहाँ माली का काम करते थे? याद है?

रामदीन—जी हाँ सरकार, याद क्यों नहीं है? क्या मैं ऐसे मालिक को कभी भूल सकता हूँ? लेकिन

वे तो इलाज करने विलायत गये थे। और सुना वहीं पर....

साहब—हाँ, वहीं पर उनकी मौत हो गयी।

रामदीन—सरकार, आप उनके कोई रिश्तेदार हैं क्या ?

साहब—नहीं, मैं उनका वकील हूँ। राजा साहब ने मरने के पहले एक वसीयत लिखी थी।

रामदीन—तब तो वे बहुत-से रुपये हमारे गाँव के स्कूल और अस्पताल के लिए छोड़ गये होंगे। हाय, उनके जैसा उदार आदमी दुनियाँ में मिलना कठिन है।

वकील—तुम्हारा कहना बिलकुल ठीक है। लेकिन उन्होंने वसीयत में यह भी लिखा है कि यह धन तुमको दी जाय। यह लो, तुम्हारे बुढ़ापे में यह धन तुमको बड़ा काम देगा।

यह कहकर वकील साहब ने थैली रामदीन के हाथ में दे दी। उसने काँपते हुए हाथों से थैली ले

ली और वकील साहब को सलाम करके अपनी झोंपड़ी की ओर चला।

वहाँ जाकर उसने गिना तो थैली में पूरे दो हज़ार रुपये थे। थोड़ी देर के लिए उसको अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि एकाएक उसका भाग्य खुल जायगा।

राजा रामपाल सिंह के विलायत चले जाने के बाद रामदीन ने राजा साहब की नौकरी छोड़ दी थी। राजा साहब के विलायत चले जाने के बाद उनकी ज़मींदारी की देख-भाल एक मुंशीजी करते थे। उनके साथ रामदीन की नहीं बनी। इसलिए उसने राजा साहब की नौकरी छोड़ दी और एक सेठ के बग़ीचे में काम करने लगा। वहाँ उसे दस रुपया महीना मिलता था।

रुपयों की थैली मिल जाने के बाद रामदीन तरह-तरह की बातें सोचने लगा। उस दिन किसी काम में उसकी तबीयत न लगी। जब सांझ हुई

तो वह सोचने लगा—मेरी झोंपड़ी में तो न दरवाज़ा है न ताला लगाने के लिए कोई जगह। इसके अलावा मिस्त्री शंकर का लड़का 'गुलाब' रोज़ मेरे घर की तलाशी लिया करता है। उसकी आँखों से मेरी झोंपड़ी की एक छोटी सी चीज़ भी नहीं बचती। इसलिए मैं इस थैली को हरगिज़ अपने पास नहीं रखूँगा। रात भर लिए इसे कहीं छिपा दूँगा। कल सवेरे शंकर से छुट्टी लेकर अपने गाँव चला जाऊँगा और अपनी ज़िन्दगी के बाक़ी दिन आराम से बिताऊँगा।

यह सोचकर वह उठा और बाग के उस कोने की तरफ़ गया जहाँ बरगद का एक पुराना पेड़ था। रामदीन ने सब की आँख बचाकर रुपयों की थैली उसी पेड़ के खोखले में रख दी और अपनी झोंपड़ी में वापस चला आया।

लेकिन गुलाब की आँखों से रामदीन कैसे बच सकता था? उस शैतान लड़के ने रामदीन को बरगद के पेड़ पर चढ़ते हुए देख लिया। गुलाब घूमने के लिए

उधर ही आया था। उसने पेड़ की आड़ में छिपकर

सारी बातें देख लीं। रामदीन के लौट जाने के बाद वह उस पेड़ पर चढ़कर देखने लगा कि रामदीन ने वहाँ

क्या रखा है। वहाँ रुपयों की थैली देखकर उसे बड़ा अचरज हुआ। वह चुपचाप थैली लेकर अपने घर चला गया और बाप के हाथ में थैली दे दी। मिस्त्री शंकर ने थैली देखकर पूछा—अरे, यह तुम्हें कहाँ मिली!

गुलाब ने कहा—दादा, रामदीन इसे एक जगह छिपाकर रख रहा था। मैंने देख लिया। बस, चुपके से उठा लाया हूँ। शंकर ने गिना तो पूरे दो हज़ार रुपये थे। उसको विश्वारा हो गया कि रामदीन ये रुपये कहीं से चुराकर लाया है। उसने बेटे से कहा—ये रुपये यहीं रहने दो। तुम जाओ, खेलो। गुलाब चला गया। कुछ देर के बाद शंकर ने रुपयों की थैली ले जाकर कहीं छिपा दी।

रात को खा-पीकर जब शंकर बातें कर रहा था तब रामदीन आया और बोला—मिस्त्रीजी, मैं कुछ ज़रूरी काम पर घर जाना चाहता हूँ। न मालूम कब तक लौटूँगा। इसलिए मेरा हिसाब साफ़ करा दो। मैं कल सवेरे ही रवाना हो जाऊँगा।

शंकर ने पूछा—इतनी जल्दी क्या है रामदीन ?

रामदीन ने जवाब दिया—घर से चिट्ठी आयी है कि वहाँ कुछ ज़रूरी काम है। तुम फ़िक्र मत करो। मैं बहुत जल्दी वापस आ जाने की कोशिश करूँगा।

शंकर ने कहा—अच्छी बात है। मैं कल सवेरे ही मुँशीजी से तुम्हारे वेतन के रुपये लाकर रख दूँगा। तुम आकर ले जाना। लेकिन देखो, फिर जल्दी वापस चले आना। ऐसी आराम की नौकरी इस बुढ़ापे में तुम्हें और कहाँ मिलेगी ?

'अच्छा' कहकर रामदीन चला गया। दूसरे दिन सवेरे ही उसने आकर शंकर से अपना वेतन लिया। फिर झोंपड़ी में जो कुछ था उसे लेकर अपने गाँव की तरफ़ रवाना हुआ।

थोड़ी देर बाद गुलाब ने कहा—दादा, बेचारे रामदीन ने तो ख़ूब धोखा खाया। जब उसे थैली नहीं मिलेगी तो वह रो-रोकर प्राण दे देगा।

शंकर ने हँसकर कहा—अरे, अब थैली कहाँ

मिलेगी ? मैंने उसे ऐसी जगह छिपा रखा है कि उसके बाप को भी उसका पता नहीं लग सकता।

गुलाब ने पूछा—दादा, कहाँ छिपा रखा है ?

शंकर ने धीरे से कहा—ख़बरदार, किसी से कहना मत! वहाँ बाग के कोने में पुराना बरगद का पेड़ है न ? उसी के खोखले में।

गुलाब ने घबराकर कहा—अरे! वहीं से तो मैं उसे उठा लाया था। उसी खोखले में तो रामदीन ने उसे छिपाकर रखा था। तुमने मुझसे पहले ही क्यों नहीं कहा ? अब तो रामदीन थैली लेकर अपने घर चला गया होगा।

यह सुनकर शंकर को ऐसा मालूम हुआ जैसे बिच्छू ने डंक मार लिया हो।

सूरज क्यों नहीं निकला

त्रिचिनापल्ली कावेरी नदी के किनारे है। बहुत दिन हुए यहाँ एक राजा राज करता था। एक दिन वह अपने

मंत्री के साथ नदी के किनारे टहल रहा था। कावेरी पच्छिम से पूरब की ओर बहती है। राजा ने देखा कि नदी का पानी बहकर पूरब की तरफ़ जा रहा है। उसने अपने मंत्री से पूछा—पूरब की तरफ़ कौन-सा देश है? मंत्री ने जवाब दिया—यहाँ से पूरब में तंजाऊर का ज़िला है।

राजा ने कहा—हमारी नदी के पानी से तंजाऊर के लोग फ़ायदा उठा रहे हैं। यह ठीक नहीं। आज ही नदी में बाँध बाँधकर पानी बंद कर दो।

मंत्री जानता था कि राजा बड़ा हठी है और उसके साथ बहस करने से कोई लाभ न होगा। इसलिए उसने कहा—बहुत अच्छा महाराज।

दूसरे ही दिन बाँध तैयार हो गया। कावेरी का पानी रुक गया। नदी भर गयी। उसमें बाढ़ आ गयी। पानी किनारों से बहकर शहर में घुसने लगा। शाम होते-होते तमाम शहर में पानी भर गया। सड़कों पर पानी। घरों में पानी। आँगन में पानी। रसोई-

कुछ दिनों के बाद एक ग़रीब बूढ़ा सेठजी के दरवाज़े पर भीख माँगने आया और बोला—भाई, मैं बहुत भूखा हूँ। कुछ खाने को दो। सेठानी ने कहा—जाओ, यहाँ कुछ नहीं मिलेगा। बूढ़े ने फिर गिड़-गिड़ाकर कहा—माँ, एक मुट्ठी चावल दे दो। कई दिन से कुछ खाया नहीं है। भगवान तुम्हारा भला करेगा। लेकिन सेठानी को इसपर भी दया नहीं आयी। वे गरजकर बोलीं—अरे कोई है? निकालो इस बूढ़े को: यहाँ आकर टर-टर कर रहा है।

बूढ़ा निराश होकर सेठ के घर से भूखा ही लौट गया। अब वह लाठी टेकता हुआ किसान के घर पहुँचा। और कुछ खाने को माँगा। किसान की स्त्री बूढ़े की आवाज़ सुनकर बाहर निकली तो उसने अपने दरवाज़े पर एक ग़रीब आदमी को खड़ा देखा। उसको दया आ गयी। उसने उसको अपने पास बुलाकर बिठाया और पूछा—दादा, तुम कहाँ के

रहनेवाले हो ? क्या तुम्हारे घर में, तुम्हारी देख-रेख करनेवाला कोई नहीं है ?

बूढ़े ने कहा— हाँ, है क्यों नहीं ? मेरे बहुत

बाल-बच्चे हैं। लेकिन वे मेरी परवाह नहीं करते।

किसान की स्त्री ने अपने पास जो रूखा-सूखा खाना था उसको बड़े प्रेम से खिलाया। और उसे रात भर अराम से अपने घर में रखा।

दूसरे दिन सवेरे किसान की स्त्री ने उठकर देखा बूढ़े का कहीं पता न था।

परीक्षा ख़तम हो गयी। लक्ष्मी और दया दोनों भगवान के सामने हाज़िर हुईं। अब उनको मालूम हुआ कि वह बूढ़ा आदमी भगवान विष्णु के सिवाय दूसरा कोई नहीं था। यह जानकर लक्ष्मी का सिर शरम से नीचा हो गया।

सच बोलनेवाला चोर

किसी गाँव में एक आदमी रहता था। वह बहुत ग़रीब था। उसके पास खेती-बारी कुछ नहीं थी। इसलिए वह बड़ी मुश्किल से अपनी गुज़र करता

था। जब पेट भरने का कोई दूसरा उपाय नहीं मिला तब वह चोरी करने लगा। चोरी से उसको काफ़ी धन मिल जाता था। लेकिन उसके मन को संतोष नहीं होता था।

एक दिन वह एक साधु से मिला। साधु ने उसकी कथा सुनकर कहा—तुम झूठ बोलना छोड़ दो। भगवान तुम्हारा भला करेगा। चोर ने कहा—महात्मा, मैं तो चोर हूँ। सच बोलने से मेरा पेट कैसे भरेगा? साधु ने कहा—इसकी चिंता मत करो। भगवान पर भरोसा रखो। उस दिन से उसने हमेशा सच बोलने का निश्चय कर लिया।

एक दिन रात को वह चोरी करने जा रहा था। रास्ते में उसे एक आदमी मिला। उस आदमी ने उससे पूछा—भाई, तुम कौन हो? और कहाँ जा रहे हो?

चोर बड़ी चिंता में पड़ा। लेकिन वह हमेशा सच बोलने का निश्चय कर चुका था। इसलिए

उसने उस आदमी से कहा—मैं चोर हूँ और राजा के घर चोरी करने जा रहा हूँ।

चोर की बात सुनकर उस आदमी को बड़ा अचरज हुआ। उसने सोचा कि यह कैसा चोर है जो अपनी बात बिलकुल नहीं छिपाता। आख़िर उस आदमी ने कहा कि चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ। इसपर दोनों मिलकर राजा के घर पहुँचे। दोनों ने आपस में यह तय किया कि जो मिलेगा उसमें से आधा-आधा बाँट लेंगे। चोर को यह नहीं मालूम हुआ कि दूसरा आदमी खुद राजा ही था। राजा वेष बदलकर शहर की हालत जानने के लिए घूम रहा था।

राजा के घर पहुँचकर चोर अंदर घुसा और राजा बाहर खड़ा था। चोर ने अंदर जाकर बड़ी मुश्किल से एक संदूक खोला। उसमें रत्नों के तीन हार रखे हुए थे। चोर ने दो हार ले लिये और एक हार उसी में छोड़कर बाहर चला आया। बाहर आकर

उसने एक हार राजा को देकर कहा—भाई, संदूक में तीन हार रखे थे। लेकिन मैं दो ही लाया हूँ जिससे बाँटने में झगड़ा न हो। इसके बाद दोनों अपने-अपने घर चले गये।

दूसरे दिन राजा ने ख़ज़ांची को बुलाकर कहा—मालूम होता है कल रात को हमारे यहाँ चोरी हुई है। जाकर देखो, क्या क्या चोरी गया है।

ख़ज़ांची ने भीतर जाकर देखा कि रत्नों का संदूक खुला पड़ा है और उसमें से दो हार ग़ायब हैं। यह देखकर ख़ज़ांची के दिल में लालच पैदा हुआ। उसने सोचा—तीसरा हार भी गायब करने का यह अच्छा मौक़ा है। उसने तीसरे हार को उठाकर अपनी जेब में रखा और राजा से जाकर बोला—सरकार, संदूक से तीनों हार गायब हैं।

ख़ज़ांची की बात सुनकर राजा को बहुत गुस्सा आया। वह फ़ौरन समझ गया कि तीसरा हार ख़ज़ांची ने चुराया है। आख़िर ढूँढ़ने पर ख़ज़ांची

को जेब से तीसरा हार निकला। राजा ने उसी वक्त ख़ज़ांची को निकाल दिया और उसकी जगह पर उस चोर को बुलाकर ख़ज़ांची बनाया।

सच्चा न्याय

सिकंदर यूनान देश का एक बादशाह था। वह बड़ा बहादुर था। उसने बहुत से देश जीते थे। एक बार उसने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की और पंजाब के कुछ हिस्सों को जीत लिया।

एक दिन घूमता हुआ वह एक छोटे गाँव में जा पहुँचा। वहाँ एक किसान का झोंपड़ा था। वह किसान उस गाँव का मुखिया था। उसने सिकंदर की बड़ी ख़ातिर की और उसको उँचे आसन पर बिठाया। इसके बाद वह एक चाँदी की थाली में कुछ खाने-पीने की चीज़ें और कुछ अशर्फ़ियाँ लेकर बादशाह के सामने हाज़िर हुआ। खाने-पीने की चीज़ों के साथ अशर्फ़ियों को देखकर सिकंदर हँसा। उसने

किसान से पूछा—क्या तुम लोग खाने-पीने की चीज़ों के साथ सोना भी खाते हो ?

किसान ने जवाब दिया—नहीं महाराज, हम लोग सोना नहीं खाते। लेकिन हमने सुना था कि आप सोने ही की तलाश में अपना घर छोड़कर इतनी दूर आये हैं। इसलिए मैं यह भेंट आपके सामने लाया हूँ। आप कृपा करके इसे ले लीजिये।

सिकंदर ने जवाब दिया—नहीं नहीं. मैं धन-संपत्ति की खोज में हिन्दुस्तान नहीं आया हूँ। मैं तुम लोगों के रस्म-रिवाज़ देखने के लिए आया हूँ।

इतने में उसी गाँव के दो आदमी अपनी पंचायत लेकर मुखिया के पास पहुँचे। एक आदमी ने कहा—मैंने इस आदमी से एक खेत मोल लिया था। उस खेत में मुझे एक अशर्फ़ियों से भरा हुआ घड़ा मिला है। यह घड़ा मेरा नहीं है। क्योंकि मैंने इससे सिर्फ़ खेत मोल लिया है, घड़ा नहीं लिया।

मैं उस घड़े को इसे देता हूँ तो यह लेता नहीं है। मेहरबानी करके आप इसे समझा दीजिये।

यह सुनकर मुखिया ने दूसरे आदमी से पूछा—तुमको क्या कहना है?

दूसरे आदमी ने कहा—मैंने जब अपना खेत इस आदमी को बेच दिया तब खेत में पैदा होनेवाली चीज़ें भी बेच दीं। इसलिए अब उस खेत में अनाज पैदा हों या अशर्फ़ियाँ, सब इस आदमी का

है। इसके भाग्य से उस खेत में अशर्फ़ियों का घड़ा मिला है। मैं उस घड़े को नहीं ले सकता।

दोनों की बातें सुनकर मुखिया किसान कुछ देर तक सोचता रहा। तब उसने पहले आदमी से पूछा—क्यों, तुम्हारे घर में एक लड़की है न, जो सयानी हो गयी है और शादी करने लायक़ है? किसान ने जवाब दिया—जी हाँ, मेरे एक सयानी लड़की है।

तब मुखिया ने दूसरे आदमी से पूछा—तुम्हारे लड़के की क्या उमर है।

दूसरे ने जवाब दिया—वह अब पच्चीस साल का हो गया है।

मुखिया ने पहले आदमी से कहा—ठीक है, तुम अपनी लड़की इसके लड़के को दे दो और अशर्फ़ियों का घड़ा उसको दहेज में दे दो। यह सुनकर दोनों आदमी बहुत ख़ुश हुए। और मुखिया को राम राम करके चले गये।

इस पंचायत को देखकर सिकंदर को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने मुखिया से कहा—भाई, मैं यही देखने के लिए यहाँ आया था। मैंने सुन रखा था कि हिन्दुस्तान के लोग बड़े ईमानदार और उदार होते हैं और किसी के दिल में कोई लालच नहीं होता। आज इन बातों को मैंने अपनी आँखों से देखा।

यह कहकर सिकंदर वहाँ से चला गया।

माँ की सेवा

जर्मनी के बर्लिन शहर में एक विधवा रहती थी। उसके और कोई नहीं था। केवल एक लड़का था। लड़के की उमर क़रीब बारह साल की थी। वह विधवा बहुत ग़रीब थी। उसके घर में न काफ़ी खाना था, न पहनने-ओढ़ने के लिए काफ़ी कपड़ा। फिर भी वह खुश थी और उसकी खुशी का कारण था उसका लड़का। उसको वह अपनी जान से भी बढ़कर प्यार करती थी।

लड़का भी बड़ा सुन्दर और भाला-भाला था। वह अपनी बूढ़ी माँ को छोड़कर कहीं न जाता था। वह हमेशा उसी की सेवा में लगा रहता था।

एक दिन माँ बीमार पड़ी। उसके अंग-अंग में पीड़ा होने लगी। बेटा माँ की चारपाई के पास उदास बैठा था। कोई उपाय नहीं था। कोई देखने-वाला नहीं था। जब भूखे-प्यासे कई दिन बीत गये और माँ अच्छी न हुई तो लड़का रोने लगा। लेकिन माँ ने उसको समझाया और कहा—बेटा, दुख मत कर। मैं जल्दी अच्छी हो जाऊँगी। जा, शहर में किसी दयालु डाक्टर के पास जाकर उनको बुला ला।

लड़का डाक्टर की तलाश में चला। सड़क पर जाकर उसने देखा कि एक के बाद एक गाड़ियाँ, मोटर, ट्राम दौड़ी जा रही हैं। डाक्टर, वकील, व्यापारी, सब तरह के लोग उनमें बैठकर जा रहे थे। लेकिन किसी का ध्यान लड़के की ओर न

गया। लड़का कैसे पहचान सकता था कि उनमें कौन डाक्टर है ?

थोड़ी देर तक वह यह सोचता हुआ खड़ा रहा कि इनमें कौन डाक्टर है। इतने में एक सजी हुई गाड़ी उधर से होकर निकली। उस गाड़ी में बढ़िया कपड़े पहने एक आदमी बैठा था। लड़के ने सोचा यह ज़रूर डाक्टर होगा। वह आगे बढ़कर गाड़ी के सामने खड़ा हो गया। कोचवान ने गाड़ी रोक दी। लड़का उस आदमी के पास जाकर रो-रोकर कहने लगा—सरकार, कई दिनों से मेरी माँ बहुत बीमार है। हमारे पास इतना धन नहीं है कि हम उसका इलाज करा सकें। मैं समझता हूँ कि आप एक डाक्टर हैं। आप मेहरबानी करके मेरी अम्मा को देखिये और उसको कुछ दवा दीजिये।

लड़के की बात सुनकर आदमी का हृदय दया से भर आया। उसने कहा—लड़के, मैं डाक्टर नहीं हूँ। लेकिन, यह लो रुपये और किसी डाक्टर को

बुला लाओ। यह कहकर उसने दस रुपये का एक नोट लड़के के हाथ में रख दिया। फिर लड़के के घर का पता लेकर वह चला।

लड़के का मन ख़ुशी से खिल उठा। उसने उस आदमी को प्रणाम किया और रुपया लेकर डाक्टर की तलाश में गया।

लड़के की माँ चारपाई पर पड़ी-पड़ी तड़प रही थी और सोच रही थी—मैंने अपने लड़के को क्यों भेजा? कहीं वह रास्ता भूल जाय या किसी गाड़ी के नीचे दब जाय तो क्या होगा? इतने में घर का दर्वाज़ा खुला। बुढ़िया ने समझा—मेरा लाल आ रहा है। लेकिन दर्वाज़ा खुलने पर उसने दूसरे ही आदमी को देखा। तब उसने सोचा—शायद डाक्टर हो।

आदमी विधवा की चारपाई के पास कुरसी पर बैठ गया और बोला—मैं डाक्टर हूँ। तुम्हारे लड़के ने मुझे भेजा है। वह भी आता होगा। कहो, तुम्हारी तबीयत कैसी है?

विधवा ने कहा—बदन में बड़ा दर्द है। शायद कुछ बुखार भी है। आदमी ने उसकी नब्ज़ देखकर कहा—घबराओ मत, रोग मामूली है। मैं दवा का नाम लिखे देता हूँ। तुम अपने लड़के को भेजकर दवा मँगवा लेना। यह कहकर उस आदमी ने एक काग़ज़ पर कुछ लिखकर बुढ़िया के हाथ में दे दिया और चला गया।

थोड़ी देर में बुढ़िया का लड़का डाक्टर को लेकर आया और बोला—अम्मा, मैं डाक्टर साहब को बुला लाया हूँ। लड़के की बात सुनकर बुढ़िया अचरज में पड़ गयी। उसने कहा—बेटा, दो डाक्टरों की क्या ज़रूरत थी? एक डाक्टर तो अभी आये थे। वे मेरी नब्ज़ देखकर काग़ज़ दे गये हैं।

लड़का भी आश्चर्य में पड़ गया और कहने लगा—माँ, मैंने तो किसी डाक्टर को नहीं भेजा। बुढ़िया ने डाक्टर का दिया हुआ नुस्ख़ा देकर कहा—लो, देखो। यही उसका दिया हुआ नुस्ख़ा है।

लड़के ने नुस्ख़ा लेकर डाक्टर को दिखाया। डाक्टर ने उसे देखकर कहा—यह तो नुस्ख़ा ही नहीं है। यह तो एक हज़ार रुपये का चेक है। तुम इसे बैंक में ले जाओ। वहाँ इसे दिखाने पर तुम्हें एक हज़ार रुपया मिल जायगा। चेक देनेवाले जर्मनी के बादशाह "जोसफ़" हैं।

बादशाह की दयालुता देखकर तीनों अचरज में पड़ गये।

दूध में पानी

एक ग्वाला दूध का रोज़गार करता था। उसके पास बहुत-सी गायें और भैंसें थीं। वह हर महीने सैकड़ों रुपयों का दूध बेचता था।

दूध का रोज़गार करनेवाले अक्सर दूध में पानी मिलाकर बेचते हैं। बिरला ही कोई ग्वाला होगा जो दूध में पानी न मिलाता हो। यह ग्वाला भी बिना पानी मिलाये दूध कभी न बेचता था।

एक दिन वह ग्वाला बहुत-सा रुपया लेकर गाय खरीदने चला। उसके पास दो-ढाई सौ रुपये थे। वह पास के एक बाज़ार में जा रहा था। वहाँ अच्छी गायें बिकती थीं।

चलते-चलते जब दोपहर हुई तो ग्वाले को भूख लगी। सड़क के पास ही एक बड़ी तालाब था, जिसके किनारे कई बड़े बड़े पेड़ थे। ग्वाले ने सोचा—चलो, खाना खाकर थोड़ी देर आराम कर लें, फिर बाज़ार जायँगे। यह सोचकर वह तालाब पर गया और कपड़े उतारकर नहाने लगा। रुपयों की थैली कमर से खोलकर कपड़ों के नीचे रख दी।

किनारे के एक पेड़ पर एक बड़ा बन्दर बैठा हुआ था। बन्दर ने रुपयों की थैली देखी तो समझा कि इसमें कुछ खाने को है। वह धीरे-धीरे नीचे उतरा और थैली लेकर पेड़ पर चढ़ गया।

बन्दर को थैली ले जाते देखकर ग्वाला बहुत घबड़ाया। वह बन्दर को डराने, धमकाने और

उसपर पत्थर फेंकने लगा। मगर कोई नतीजा नहीं निकला। बन्दर ने थैली नहीं छोड़ी। ग्वाला लाचार होकर उसी पेड़ के नीचे बैठ गया।

थोड़ी देर में बन्दर ने रुपयों की थैली खोल डाली और उसमें से एक रुपया निकालकर उसे बड़े ग़ौर

से देखने लगा। इसके बाद उसने उस रुपये को तालाब में डाल दिया। फिर उसने दूसरा रुपया निकाला। उसको भी उलट-पलटकर देखा और उसे ज़मीन पर फेंक दिया।

यह देखकर ग्वाला बहुत घबड़ाने लगा, लेकिन वह कर क्या सकता था? उसने बन्दर को डराने की बहुत कोशिश की, लेकिन सब बेकार हुआ।

बन्दर ने अब तीसरा रुपया निकाला। उसको भी उलट-पलटकर देखा और फिर उसे पानी में डाल दिया। इस तरह बन्दर बार-बार एक-एक रुपया निकालता, उसको ग़ौर से देखता और कभी पानी में, और कभी ज़मीन पर फेंक देता था। धीरे धीरे थैली के सब रुपये खतम हो गये। बन्दर उठकर दूसरे पेड़ पर चला गया।

बन्दर ने जो रुपये ज़मीन पर गिराये थे, उन्हें ग्वाले ने चुन लिया। उसने सब रुपये गिने तो

ठीक सवा सौ थे। यानी घर से जितने रुपये लेकर चला था, उसके ठीक आधे थे।

बचे हुए रुपये लेकर ग्वाला अपने घर की तरफ़ चला। वह रास्ते में सोचने लगा—सच है, बेईमानी का पैसा कभी काम नहीं आता। मैं आधा दूध और आधा पानी मिलाकर बेचा करता था। बन्दर ने ठीक इन्साफ़ किया। उसने दूध का दाम मुझे दे दिया और पानी का दाम पानी में फेंक दिया।

इसी को कहते हैं 'दूध का दूध और पानी का पानी।'

बख़्शीश माँगने की सज़ा

एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था। वह बड़ा विद्वान था। लेकिन था बहुत ग़रीब। लोग कहते हैं कि विद्या और धन दोनों एक साथ किसी के पास नहीं होते। उस ब्राह्मण के बारे में यह कहावत बिलकुल सच थी।

एक दिन उस ब्राह्मण ने सोचा—चलो राजा के

पास। उनको कविता सुनाकर कुछ माँग लावें। राजा लोग उदार होते हैं। ज़रूर कुछ न कुछ दे ही देंगे। यह सोचकर उसने अपनी पुरानी शाल और पगड़ी पहनी और चल पड़ा।

ब्राह्मण राजा की डयोढ़ी पर पहुँचा। वहाँ एक सिपाही पहरा दे रहा था। सिपाही ने फटेहाल ब्राह्मण को देखकर उसे रोका—ख़बरदार, कौन है ?

ब्राह्मण ने कहा—भाई, एक ग़रीब ब्राह्मण हूँ। महाराज के दर्शन करना चाहता हूँ।

सिपाही—जाओ, महाराज को फ़ुरसत नहीं है।

ब्राह्मण समझ गया कि यह कुछ चाहता है। अक्सर राज-दरबार के नौकर बख़शीश के आदी होते हैं। अगर उनको बख़शीश न दो तो कोई काम न चले। ब्राह्मण ने कहा—भाई जाने दो। राजा साहब से जो मिलेगा उसमें से तुमको भी कुछ हिस्सा दूँगा।

सिपाही ने कहा—अच्छा, तो जा सकते हो।

ब्राह्मण राजा के दरबार में पहुँचा। वहाँ उसने अच्छे-अच्छे पद सुनाये। राजा ने ख़ुश होकर अपने ख़ज़ांची के नाम एक ख़त लिख दिया कि इनको पाँच रुपये दे दो। ब्राह्मण रुपये लेकर घर चला गया। सिपाही को रुपया देना बिलकुल भूल गया।

दूसरे दिन ब्राह्मण फिर आया। उस दिन भी उसने सिपाही से कुछ देने का वादा किया। पर दिया कुछ नहीं। इस तरह कई दिन गुज़र गये। सिपाही सोचने लगा—यह ब्राह्मण बड़ा झूठा मालूम होता है। अच्छा, अब इसको इसकी सज़ा देनी चाहिए। सिपाही राजा के पास पहुँचा और सलाम करके कहा—हुज़ूर, वह ब्राह्मण जो रोज़ यहाँ आता है बहुत ख़राब आदमी मालूम होता है। रोज़ लोगों से आपकी शिकायत करता है। मैंने कल अपने कानों आपकी शिकायत करते हुए सुना। राजा ने सिपाही की बात सच मान ली।

दूसरे दिन फिर ब्राह्मण दरबार में आया। ब्राह्मण

के पद सुनने के बाद राजा ने अपने ख़ज़ांची के नाम एक ख़त लिख दिया। ब्राह्मण ख़त लेकर बाहर आया। वह उस सिपाही के पास गया। और ख़त उसके हाथ में देकर बोला—लो भाई, आज का इनाम तुम ही लो।

सिपाही ख़त लेकर ख़ुश होता हुआ ख़ज़ांची के पास पहुँचा। ख़ज़ांची ने जब ख़त खोलकर पढ़ा तब उसको बड़ा अचरज हुआ। उसमें लिखा था—'ख़त लानेवाले को दस कोड़े लगवा दो।' बेचारे सिपाही को क्या मालूम था कि ख़त में क्या लिखा है। ख़ज़ांची ने राजा के हुक्म के मुताबिक़ सिपाही को दस कोड़े लगवा दिये। बेचारा मार खाकर रोता-पीटता राजा के पास गया। राजा को ख़ज़ांची पर बड़ा ग़ुस्सा आया। उसने उसे बुलाकर पूछा—तुमने सिपाही को क्यों पीटा।

ख़ज़ांची ने हाथ जोड़कर कहा—हुज़ूर का हुक्म। यह सिपाही ख़त लेकर मेरे पास आया। मैंने आपके हुक्म के मुताबिक़ इसको कोड़े लगवा दिये।

राजा को बड़ा अचरज हुआ। उसने सिपाही से पूछा यह ख़त तुमको कैसे मिला ?

सिपाही ने कहा—हुज़ूर, उसी ब्राह्मण ने दिया जो रोज़ यहाँ आया करता है।

राजा ने ब्राह्मण को बुलाकर पूछा। ब्राह्मण ने सारी कथा सुनायी। अब तो राजा को उस सिपाही पर बड़ा ग़ुस्सा आया। उसे फ़ौरन नौकरी से अलग कर दिया।

देखो, बख़्शीश माँगने की उसकी कैसी सज़ा मिली?

सोने की थाली

एक दिन काशी के मंदिर में आकाश से एक सोने की थाली गिरी। उस थाली पर ये शब्द लिखे हुए थे—यह भेंट उसके लिए है जो भगवान को सब से ज़्यादा प्यार करता है। इसे पढ़कर मंदिर के पुजारी ने यह सूचना दी कि जो कोई अपने को उस भेंट के लायक़ समझता हो वह मंदिर में हाज़िर हो।

उस दिन से रोज़ सैकड़ों आदमी उस भेंट को पाने के लिए मंदिर में आने लगे। साधु, संत, पंडित, ज्ञानी, धनी, ग़रीब, दानी सब तरह के लोग अपना-अपना भाग्य आज़माने के लिए वहाँ पर आते थे। सब लोग अपने अपने अच्छे कामों को पुजारी से कहकर अपने को वह थाली पाने के योग्य साबित करते थे।

एक दिन एक अमीर आदमी पुजारी के सामने आया और बोला—मैंने इस साल की अपनी सारी आमदनी ग़रीबों में बांट दी है। पुजारी ने समझा सचमुच यह आदमी सब से बड़ा दानी और ईश्वर-प्रेमी है। उसने बड़े आदर के साथ सोने की थाली उसके हाथ में दे दी। लेकिन यह क्या! उसके छूते ही थाली की सब चमक ग़ायब हो गयी और वह लोहे की हो गयी। अमीर ने घबराकर थाली नीचे पटक दी। उसके छोड़ते ही थाली फिर पहले की तरह चमकने लगी।

इसी तरह साल भर तक लोग अच्छे-अच्छे काम करके उस थाली को पाने के लिए आते रहे। पुजारी ने

जिसको सब से बड़ा दानी और ईश्वर-भक्त समझा उसके हाथ में थाली दी। लेकिन हर बार उसकी चमक ग़ायब हो गयी और वह लोहे की बन गयी।

एक दिन एक ग़रीब किसान काशी में भगवान के दर्शन करने आया। उसको उस सोने की थाली के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। जाड़े के दिन थे। बड़ी ठंड पड़ रही थी। गंगा में स्नान करके वह विश्वनाथ जी के दर्शन करने चला। रास्ते में उसने देखा कि एक ग़रीब भिखमंगा सड़क के किनारे बैठकर भीख माँग रहा है। ठंड के कारण उसका सारा बदन काँप रहा है। दाँत कटकटा रहे हैं और मुँह से आवाज़ भी नहीं निकल रही है। उसे देखकर किसान को बड़ी दया आयी। उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। उसने अपना कम्बल उतारकर उस ग़रीब भिखमंगे को उढ़ा दिया और चुपचाप विश्वनाथजी के दर्शन करने चला गया।

मंदिर में घुसकर उसने देखा कि लोगों की भीड़

लगी हुई है। मंदिर का पुजारी सोने की एक थाली सामने रखे बैठा है। हर एक आदमी अपने अच्छे

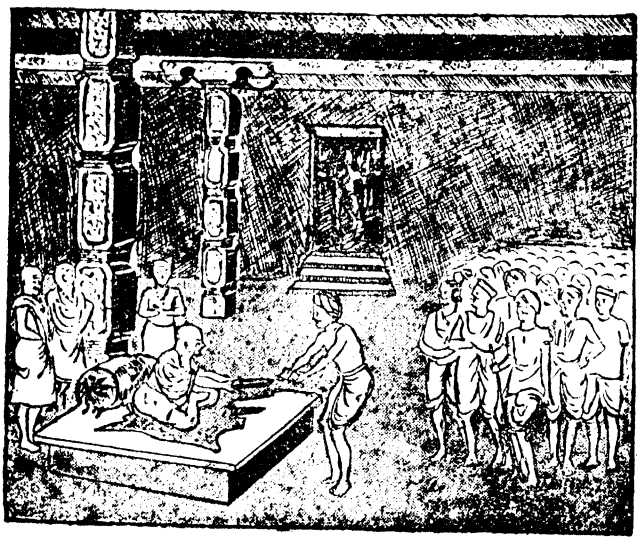

कामों का बखान कर रहा है। किसान सबके पीछे जाकर खड़ा हो गया और तमाशा देखने लगा। जब सब लोग अपने-अपने अच्छे कामों का बखान कर चुके तब एक पुजारी ने किसान को पास बुलाकर पूछा—तुम क्यों चुप खड़े हो? तुम भी कुछ कहो।

तुमने कोई अच्छा काम करके भगवान को ख़ुश किया है या नहीं? किसान ने बड़ी नम्रता के साथ कहा—बाबा, मैं ग़रीब आदमी हूँ। मैं किस तरह भगवान को ख़ुश कर सकता हूँ! मुझे तो भर पेट खाने को भी नहीं मिलता।

यह सुनकर दूसरे पुजारी ने कहा—यह आदमी बहुत सच्चा मालूम होता है। ज़रा इसके हाथ मे थाली देकर देखो तो सही। बड़े पुजारी ने थाली किसान के हाथ में रखी। लेकिन आश्चर्य! किसान के छूते ही थाली पहले से भी ज़्यादा चमकने लगी। यह देखकर सब लोग अचरज में आ गये। पुजारी ने किसान से कहा—"तुम भगवान को सबसे ज़्यादा प्यार करते हो और यह भेंट तुम्हारे ही लिए है।"

लालच का फल

एक व्यापारी था। एक बार उसकी एक थैली खो गयी। थैली में दो सौ रुपये थे। व्यापारी ने

सारे शहर में मुनादी करायी कि मेरी थैली खो गयी है। उस में दो सौ रुपये थे। जो आदमी मेरी थैली ला देगा उसको एक सौ इनाम दूँगा।

वह थैली एक नाई को मिली थी। नाई ने मुनादी करनेवाले से आकर पूछा—भाई किसकी थैली खो गयी है? उस थैली में कितने रुपये थे? मुनादी करनेवाले ने कहा—फ़लाँ सेठ की थैली खो गयी है। उसमें दो सौ रुपये थे। जो ला देगा उसको सेठजी एक सौ रुपया इनाम देंगे।

नाई ने कहा—अच्छा, सेठजी से कह देना, उनकी थैली मेरे पास है। मेरा इनाम दे दें तो मैं उनकी थैली वापस कर दूँगा।

व्यापारी को जब मालूम हुआ तो वह सोचने लगा—थैली का तो पता लग गया। अब कोई उपाय ऐसा करना चाहिए कि रुपये न देने पड़े। उसको एक उपाय सूझ गया। उसने नाई को बुलाकर पूछा—क्यों जी, तुमको मेरी थैली मिली है?

नाई ने कहा—हाँ, मिली है। आप मेरा इनाम दीजिये। मैं आपकी थैली अभी ला देता हूँ।

व्यापारी ने कहा—उस थैली में दो सौ रुपये और हीरे की एक अँगूठी थी। जाओ जल्दी, थैली ले आओ। मैं तुम्हारा इनाम अभी दे दूँगा।

नाई ने कहा—थैली में सिर्फ़ दो सौ रुपये थे। उसमें अँगूठी तो नहीं थी। इस पर व्यापारी ने बिगड़कर कहा—थी क्यों नहीं? ज़रूर थी। तुमने उसे कहीं छिपा दिया होगा। जाओ, जल्दी ले आओ।

नाई क़समें खाने लगा। लेकिन सेठ ने उसकी बात की ज़रा भी परवाह नहीं की। वह नाई को धमकियाँ देने लगा—अगर मेरी थैली वापस नहीं करोगे तो मैं काज़ी से जाकर शिकायत कर दूँगा।

अब नाई को भी ग़ुस्सा आ गया। उसने कहा—आप जब तक मेरा इनाम नहीं देंगे तब तक मैं आपकी थैली वापस नहीं करूँगा।

आख़िर व्यापारी ने जाकर काज़ी के पास शिकायत की। काज़ी ने नाई को बुलाकर पूछा। उसने कहा—हुज़ूर, थैली में सिर्फ़ दो सौ रुपये थे। अँगूठी नहीं थी। सेठजी ने पानेवाले को सौ रुपया इनाम देने का वादा किया था। जब मैंने इनाम माँगा तो अँगूठी की बात करने लगे।

अब काज़ी ने व्यापारी से पूछा—बतलाओ, तुम्हारी अँगूठी कैसी थी? तुमको वह कहाँ से मिली थी? उसका बनानेवाला कौन है और कहाँ रहता है?

अब तो व्यापारी बड़ी मुश्किल में पड़ा। उसने उलटा-सीधा कुछ जवाब दिया जिससे काज़ी को विश्वास हो गया कि व्यापारी झूठ बोल रहा है। उसने व्यापारी से कहा—ठीक है। मैं समझ गया। नाई को जो थैली मिली है वह तुम्हारी नहीं है। तुम्हारी थैली किसी दूसरे शख़्स को मिली होगी। तुम फिर से मुनादी कराओ कि 'तुम्हारी थैली में दो सौ रुपये और एक हीरे की अँगूठी थी।' फिर उसने नाई से

कहा—तुम जाओ। वह थैली इस आदमी की नहीं है। तुम उस थैली को चालीस दिन तक अपने पास रखो। उसमें से एक पैसा भी ख़र्च मत करना। अगर चालीस दिन तक थैलीवाले का पता न लगे तो वह थैली तुम्हारी हो जायगी।

यह सुनकर बेचारे व्यापारी का मुँह सूख गया। वह पछताने लगा—हाय! मैंने लालच में पड़कर सब गँवा दिया।

मुदलियार की उदारता

तजाऊर के पास एक गाँव में एक मुदलियार रहते थे। वे बड़े धनी और धर्मात्मा थे। वे दुख में लोगों को बहुत सहायता देते थे। कोई ग़रीब दुखिया उनके यहाँ से ख़ाली हाथ न लौटता था।

उनके गाँव से थोड़ी दूर पर हरिजनों का एक गाँव था। उसमें बहुत से हरिजन रहते थे। उनको कोई छूता तक न था। वे ऊँची जातिवालों के गाँवों

के अंदर भी नहीं जाने पाते थे। ऊँची जातिवाले उनको अपने से बहुत दूर रखते थे।

उसी गाँव में नन्दन नाम का एक हरिजन रहता था। एक बार, किसी कारण से, राजा उसपर नाराज़ हो गया। राजा के नौकर उसे खोजते हुए आ पहुँचे। बेचारे नन्दन ने जब यह सुना तब वह बहुत घबराया। उसको बचानेवाला कोई न था। ऊँची जातिवाले उसकी सहायता नहीं कर सकते थे। और बेचारे हरिजन राजा के कोप से उसे कैसे बचा सकते थे?

आख़िर नन्दन भागा भागा मुदलियार के घर पहुँचा। मुदलियार अपने घर के दरवाजे पर बैठे थे नन्दन आकर उनके पैरों के पास गिर पड़ा और कहा—मुदलियार जी, राजा के सिपाही मुझे पकड़ने के लिए आ रहे हैं। आप मुझे उनसे बचाइये। मैं ज़िन्दगी भर आपकी ग़ुलामी करूँगा।

नन्दन की बात सुनकर मुदलियार का दिल पिघल गया। उन्होंने उसको धीरज दिया। और उठाकर

अपने घर के अंदर ले गये। उसके बदन पर कोई कपड़ा नहीं था। उन्होंने उसे साफ़-सुथरे कपड़े पहनाकर अपने पास बिठा लिया और कहा—घबराओ मत। मैं राजा के सिपाहियों को तुम्हें पकड़ने न दूँगा।

इतने में राजा के सिपाही नन्दन को ढूँढ़ते हुए उसके घर पहुँचे। जब नन्दन घर पर न मिला, तब वे मुदलियार के पास आये। आकर उन्होंने पूछा—यहाँ नन्दन आया है? हम राजा के हुक्म से उसे पकड़ने आये हैं। मुदलियार ने कहा—नन्दन यहाँ नहीं है। आप लोग जाकर उसके घर में उसे ढूँढ़िये।

इस पर एक सिपाही, जो नन्दन को कुछ-कुछ पहचानता था, बोला—यही तो नन्दन मालूम होता है। कैसे साफ़-सुथरे कपड़े पहने बैठा है!

सिपाही की बात सुनकर मुदलियार ने कहा—चुप रहो। ये तो मेरे रिश्तेदार हैं।

पर उस सिपाही को विश्वास नहीं हुआ। उसने कहा—आप कहते हैं कि यह आदमी आपका रिश्तेदार है; तो क्या आप इसके साथ बैठकर खा सकते हैं?

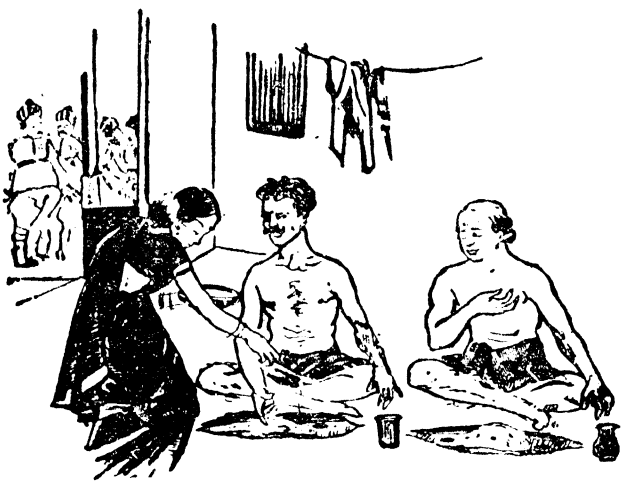

उस ज़माने में लोग हरिजनों को छूते तक नहीं थे। उनके साथ खाने को भला कौन तैयार होता? लेकिन मुदलियार ऐसे आदमी नहीं थे। उनकी नज़र में ब्राह्मण और हरिजन, दोनों एक थे। वे दोनों को भगवान का ही आदमी समझते थे।

सिपाहीं की बात सुनकर उन्होंने झट कहा—हाँ, मेरे रिश्तेदार हैं, तो मैं इनके साथ बैठकर खा क्यों नहीं सकता ?

सिपाहियों ने कहा—अच्छा तो आप इसके साथ बैठकर खाइये। तब हमको विश्वास होगा। नहीं तो हम इस आदमी को ज़रूर पकड़कर ले जायँगे।

मुदलियार ने फ़ौरन अपनी स्त्री से खाना परोसने को कहा। खाना परोसा गया। मुदलियार और नन्दन दोनों ने साथ-साथ बैठकर खाना खाया। सिपाही नन्दन को छोड़कर चले गये। उसी दिन से वहाँ के सारे हरिजन मुदलियार का आदर करने लगे। आज भी मुदलियार के ख़ानदान के लोग हैं। वे हरिजनों को बहुत प्यार करते हैं।

तीन वर

एक गाँव में एक ब्राह्मण और एक बनिया रहते थे। ब्राह्मण बड़ा गरीब था। बड़ी मुश्किल से

अपनी गुज़र करता था। पर दिल का बड़ा उदार था। जब कोई परदेशी मुसाफ़िर उसके घर आता तो वह उसकी बड़ी ख़ातिर करता था।

बनिया बड़ा धनवान था। उसके पास लाखों रुपये थे, बड़ा मकान था और वह बड़े आराम से रहता था; लेकिन था बड़ा मक्खीचूस। संतोष उसके मन में नाम को भी नहीं था। हाय पैसा! हाय रुपया! यही करते उसके दिन बीतते थे। कभी किसी गरीब या भिखारी को एक पैसा भी नहीं देता था। कोई मुसाफ़िर उसके घर पर आ जाय तो उसे फ़ौरन निकलवा देता था।

बनिये की स्त्री एक नेक औरत थी। वह काफ़ी उदार भी थी। वह अक्सर अपने पति को समझाती—"तुम इतना लालच क्यों करते हो? तुम्हें किस चीज़ की कमी है? चार पैसे गरीबों को देने से तुम्हारा धन घट नहीं जायगा। बहुत कँजूसी करना अच्छा नहीं।" लेकिन बनिये के दिल पर किसी बात का असर न होता था।

एक राज़ भगवान विष्णु दोनों की परीक्षा लेने आये। उन्होंने एक ग़रीब मुसाफ़िर का भेष बनाया था ; इसलिए कोई उनको पहचान न सका। पहले वे बनिये के दरवाज़े पर गये। बनिये ने उन्हें देखते ही कहा—"भागो, भागो, यहाँ ठहरने की जगह नहीं है।" मुसाफिर ने कहा—"भाई, रात हो गयी है। तुम बड़े आदमी हो। ज़रा अपने घर का एक कोना दे दो। वहीं पड़कर सो रहूँगा। कल सवेरा होते ही अपनी राह लूँगा"

बनिया झिड़ककर बोला—"यह कोई धर्मशाला है कि पड़कर सो रहोगे ? चलो, हटो यहाँ से।"

बेचारा मुसाफ़िर उदास होकर वहाँ से चला गया। फिर वह ब्राह्मण की झोंपड़ी में पहुँचा। ब्राह्मण ने झट से उठकर स्वागत किया और झोंपड़े के अंदर ले जाकर अपनी टूटी चारपाई पर बिठाया। आज ब्राह्मण ने दिन भर कुछ खाया नहीं था। रात के लिए घर में सिर्फ़ दो रोटियाँ थीं। उन्हें ही लाकर मुसाफ़िर को खिला दिया और खुद भूखा ही सो गया।

सवेरे उठकर मुसाफ़िर ने कहा—"मैं मामूली मुसाफ़िर नहीं हूँ। मैं 'नारायण' हूँ। मैं तुम्हारी सेवा से बहुत प्रसन्न हूँ, तुम कुछ वर माँगो।"

ब्राह्मण ने नारायण को प्रणाम करके कहा—"हे प्रभु, मुझे यही वर दीजिये कि आपमें मेरी भक्ति अटल रहे। मैं और कुछ नहीं चाहता।"

भगवान ने कहा—"बहुत अच्छा" और आगे बढ़े। लेकिन आश्चर्य! क्षण भर में उस ब्राह्मण की वह झोंपड़ी एक बड़ा महल बन गयी।

जब बनिये ने उस विचित्र मुसाफ़िर का हाल सुना तो उसे बहुत पछतावा हुआ। उसने सोचा—"मैंने अपनी बेवकूफ़ी से बहुत अच्छा मौक़ा खो दिया। अगर वह मुसाफ़िर मुझे मिल जाय तो मैं भी....."

यह सोचकर वह उसी तरफ़ दौड़ा जिधर मुसाफ़िर गया था। थोड़ी दूर जाने पर उसने उस मुसाफ़िर को सड़क पर जाते देखा।

बनिये ने हाथ जोड़कर मुसाफ़िर से कहा—

"महाराज, बड़ी ग़लती हुई। मैंने आपको पहचाना नहीं। आप मेरी ग़लती माफ़ कीजिये और मुझे भी कुछ वर दीजिये। आप फिर लौटकर आयँगे तो मैं आपकी बड़ी सेवा करूँगा।"

मुसाफ़िर ने कहा—"अच्छा, माँगो क्या वर चाहते हो?"

अब बेचारा बनिया बड़ी मुश्किल में पड़ा। वह यह निश्चय न कर सका कि कौन-सा वर माँगने से ज़्यादा लाभ होगा। इसलिए उसने कहा—"मैं अभी निश्चय नहीं कर पाया कि क्या माँगना चाहिए। आप मुझे यह वर दीजिये कि घर जाकर मैं जो इच्छा करूँ वह पूरी हो जाय।"

भगवान मुस्कुराकर बोले—"बहुत अच्छा, तीन दफ़े तक जो इच्छा करोगे वह पूरी होगी। उसके बाद की इच्छा पूरी न होगी।"

बनिया ख़ुश होकर घर चला। रास्ते भर यही सोचता गया कि किस चीज़ की इच्छा करूँ? सब से

ज़्यादा फ़ायदा किस चीज़ से होगा। लेकिन बहुत सोचने पर भी सब से फ़ायदेवाली चीज़ का पता न चला। इसलिए उदास होकर घर पहुँचा।

एक कौआ बनिये के सिर पर उड़ता हुआ 'काँव-काँव' कर रहा था। कौए की आवाज़ से चिढ़कर उसने कहा—"धत् दुष्ट! तू मर क्यों नहीं जाता?"

बनिये के मुँह से इतनी बात निकलते ही कौआ मरकर गिर पड़ा। अब बनिये को अपनी भूल मालूम हुई। उसने कहा—'हाय। मैंने बेकार एक कौए की जान ली और अपना एक वर खो दिया। अच्छा, अब आगे से ज़्यादा सावधान रहूँगा।"

कुछ खा-पीकर बनिया अपने घर के बग़ीचे में गया। वहाँ एक पत्थर पर बैठकर सब से ज़्यादा लाभ की बात अपने मन में सोचने लगा। जब साँझ हो गयी तब उसका नौकर उसे ढूँढ़ता हुआ वहाँ आया और बोला—"सेठजी, साँझ हो गयी; आइये, घर चलिये।" बनिये ने कहा—"तुम जाओ,मैं यहीं रहना चाहता हूँ।"

नौकर चला गया। उसने जाकर बनिये की स्त्री से कहा—"सेठ जी घर आना नहीं चाहते।" स्त्री ने समझा—शायद स्वामी किसी बात से नाराज़ हो गये हैं। वह खुद दौड़कर उन्हें बुलाने गयी और हाथ पकड़कर कहा—"अरे, आप इतनी देर से यहाँ क्या कर रहे हैं? आइये, घर चलिये।"

पर यह क्या? बनिया तो पत्थर से इस तरह चिपट गया था मानों उसी में से उगा हो। बनिये की स्त्री ने उसे बहुत खींचा, बनिये ने भी खूब ज़ोर लगाया, उठने की बहुत कोशिश की; लेकिन सब बेकार हुआ। अब बनिये को मालूम हुआ कि यह वरदान था। उसने अपनी बेवकूफ़ी से दूसरा वरदान भी खो दिया। उसने अपनी स्त्री से सारा हाल कहा।

सारा हाल सुनकर स्त्री ने कहा—"स्वामी, आपने लोभ में पड़कर सब काम बिगाड़ दिया। अब और सोचने से क्या होगा? इस समय तो पत्थर को

छुड़ाना ही सब से बड़े लाभ की बात है। आप कहिये—हे पत्थर, मुझे छोड़ दे।"

बनिया दुखी होकर बोला—"हाय, अब तो एक ही वरदान बचा है। उसे भी अगर पत्थर छुड़ाने में नष्ट कर दूँ तो वरदान पाने से फ़ायदा क्या हुआ?"

स्त्री ने कहा—"आपके लोभ ने यह सज़ा दी है। आपके पास किस चीज़ की कमी है? भगवान ने आपको सब दे रखा है। आप अपने असन्तोष के कारण उस धन से कुछ फ़ायदा नहीं उठाते। चार पैसा दान नहीं करते। भगवान ने आपको यह उपदेश दिया है कि आदमी को संतुष्ट रहना चाहिये और अच्छे काम करने चाहिए।"

बनिये ने स्त्री की बात मान ली और कहा—"पत्थर, मैं चाहता हूँ कि तू मुझे छोड़ दे।"

यह कहते ही बनिया छूट गया। उस दिन से बनिया रोज़ मुसाफ़िरों की सेवा और दान पुण्य करने लगा।

होनहार

एक दिन एक ब्राह्मण के घर एक ज्योतिषी आया। उसी दिन उस ब्राह्मण के घर में एक लड़का पैदा हुआ था। ब्राह्मण ने ज्योतिषी को बुलाकर उस लड़के का भविष्य पूछा। ज्योतिषी ने हिसाब लगाकर बताया—"यह लड़का बड़ा विद्वान होगा। लेकिन इसका ब्याह फ़लाने मछुए की लड़की से होगा।"

ब्राह्मण ने जब यह सुना तो उसके दुख का ठिकाना न रहा। दुख के मारे घर में जाकर कपड़े से मुँह ढाँककर लेट रहा। उसकी स्त्री ने जब उसको इस तरह पड़े हुए देखा तब उसने जाकर पूछा—"स्वामी, आपको क्या तकलीफ़ है? आप क्यों इतने उदास हैं?"

ब्राह्मण ने ज्योतिषी की बात अपनी स्त्री से कहा। उसने कहा—"इसके लिए चिंता करने की क्या ज़रूरत है? वह मछुवा आपका यजमान है। जब उसके यहाँ लड़की पैदा होगी आप उससे कह दीजियेगा कि यह लड़की बहुत बुरे लग्न में पैदा हुई है। इसको एक

टोकरी में रखकर गंगा में बहा दो, बस, बला टल जायगी।"

यह उपाय सुनकर ब्राह्मण बहुत खुश हुआ। उसने अपनी स्त्री की बुद्धि की बड़ी तारीफ़ की।

कुछ दिनों बाद उस मछुए के यहाँ लड़की पैदा हुई। मछुए ने आकर ब्राह्मण से कहा—"पंडितजी, मेरे यहाँ लड़की पैदा हुई है। आप उसकी जन्मपत्री बना दीजिये। लड़की की छाती पर एक काला तिल भी है। देखिये तो उसका क्या गुण है?"

पंडितजी ने पत्रा उठाया, थोड़ी देर तक उसके पन्ने उलटते रहे। फ़िर नाक-भौं सिकोड़कर बोले—"भाई, इस लड़की के लक्षण तो अच्छे नहीं मालूम होते। शास्त्र में लिखा है कि अगर किसी लड़की की छाती पर तिल हो तो वह अपने कुल का नाश करेगी। सो तुम अगर उसको अपने घर में रखोगे तो तुम्हारे घर में एक भी आदमी जीता न बचेगा।"

मछुए ने पूछा—"महाराज, फिर इसका क्या उपाय किया जाय ?"

पंडितजी ने कहा—"उसे एक टोकरी में रखकर गंगाजी में बहा दो।"

पंडितजी की बात सुनकर मछुआ डर गया। उसने घर जाकर सारा हाल अपनी स्त्री से कहा। स्त्री ने जब यह हाल सुना तो वह भी बहुत घबड़ायी। लेकिन एक लड़की के पीछे सारे कुल का नाश तो नहीं किया जा सकता! आख़िर मछुए ने बड़े उदास मन से उस कन्या को एक टोकरी में रखकर गंगाजी में बहा दिया। अब पंडितजी बेफ़िक्र हो गये।

पंडितजी का लड़का जब सयाना हुआ तब उन्होंने उसे पढ़ने-लिखने के लिए काशी भेज दिया। उसकी पाठशाला के सामने ही एक ब्राह्मण का घर था। उसके एक बड़ी सुन्दर लड़की थी। पंडितजी का लड़का पढ़ने-लिखने में बड़ा तेज़ था। इसलिए वह ब्राह्मण को बहुत पसंद आया। उसने उसके ही साथ अपनी लड़की

की शादी का प्रस्ताव किया। पंडितजी के लड़के ने कहा—"मैं अपने माता-पिता को लिखूँगा। अगर उन्हें मंज़ूर होगा तो मुझे भी मंज़ूर है।"

अपने लड़के का ख़त पाकर पंडितजी काशी गये। वहाँ जाकर लड़की देखी। लड़की पढ़ी-लिखी और बहुत सुन्दर थी। बस, पंडितजी के लड़के के साथ बड़ी धूम-धाम से उसकी शादी हो गयी।

जब लड़के की पढ़ाई ख़तम हुई तब वह अपनी स्त्री के साथ अपने घर लौटा।

कुछ दिनों के बाद फिर वही ज्योतिषी पंडितजी के घर आया। पंडितजी ने उसकी हँसी उड़ाते हुए कहा—"ज्योतिषी महाराज, आपकी बात तो झूठी निकली। मेरे लड़के का ब्याह उस मछुए की लड़की से न होकर एक ब्राह्मण की लड़की से हुआ।"

ब्राह्मण की बात सुनकर ज्योतिषी चुप ही रहा। फिर उसने अपनी उँगलियों पर कुछ गिनकर कहा—"पंडितजी, आप ग़लत कह रहे हैं। मेरी बात सच

निकली, आपके लड़के का शादी उसी मछुए की लड़की से हुई है। आपको विश्वास न हो तो पता लगा लीजिये, उसकी छाती पर एक काला तिल है।"

उसकी बात सुनकर पंडितजी बड़े बेचैन हुए। उन्होंने अपनी स्त्री से पूछा तो उसने कहा-"बहू की छाती पर एक काला तिल है।" अब तो पंडितजी के अचरज का कोई ठिकाना न रहा। उन्होंने ज्योतिषी से कहा—"मछुए ने तो मेरे कहने पर अपनी लड़की को गंगाजी में बहा दिया था। फिर वह काशी कैसे पहुँची?"

ज्योतिषी थोड़ी देर तक आँखें बंद करके उँगलियों पर कुछ गिनता रहा। फिर बोला—"हाँ, मछुए ने उस लड़की को गंगाजी में बहा दिया था। लेकिन वह बहती-बहती काशी पहुँची। वहाँ एक ब्राह्मण ने उस टोकरी को बहते देखा और उसमें से बच्चे की आवाज़ सुनी तो उसे उठाकर अपने घर ले गया। ब्राह्मण का कोई अपना बच्चा नहीं था।

इसलिए उसी का अपने बच्चे की तरह पाला-पोसा।

फिर उसी लड़की के साथ आपके लड़के की शादी हुई है।"

ब्राह्मण ने यह सुनकर सिर पीट लिया और कहा—ठीक है 'होनहार होकर ही मिटती है।'

पिता का प्रेम

एक धनी किसान् था। उसके दो बेटे थे। किसान अपने दोनों बेटों को बहुत प्यार करता था। और उन्हें बड़े आराम से रखता था। लेकिन लड़कों का स्वभाव एक सा नहीं था। छोटे लड़के की तबीयत घर के काम-काज में ज़रा भी नहीं लगती थी। वह हमेशा बाहर जाना चाहता था।

एक दिन छोटा लड़का अपने बाप के पास गया और बोला—"अप्पा, मैं बाहर जाकर कुछ काम करना चाहता हूँ। आप मेहरबानी करके मेरे हिस्से का धन दे दीजिये।"

बेटे की बात सुनकर बाप को बहुत अफ़सोस हुआ। वह अपने लड़कों को बहुत प्यार करता था। वह नहीं चाहता था कि उसके लड़के उसको छोड़कर कहीं

चले जायँ। लेकिन वह समझदार आदमी था। अपने बेटे की इच्छा के ख़िलाफ़ उसको अपने घर में रोकना नहीं चाहा। इसलिए उसने उसके हिस्से का रुपया उसको दे दिया और घर से बिदा किया।

छोटा लड़का चलते-चलते घर से बहुत दूर एक बड़े शहर में पहुँचा। शहर बड़ा सुन्दर था। उसमें बड़े-बड़े मकान और चौड़ी-चौड़ी सड़कें थीं। यह सब देखकर लड़के का मन लुभा गया। वह वहीं रह गया।

वह शहर के बाज़ारों और गलियों में घूमने लगा। उस शहर में कुछ शराबी और जुआरी भी रहते थे। उन लोगों को जब मालूम हुआ कि उसके पास बहुत-सा रुपया-पैसा है तब उन्होंने उससे दोस्ती कर ली। धीरे-धीरे वह भी बुरी आदतों में फँस गया। कुछ ही दिनों में शराब और जुए में उसने अपने सारे रुपये गँवा दिये। जब उसका हाथ ख़ाली हो गया और उसके पास एक भी रुपया न रहा तब उसके दोस्तों ने भी उसको छोड़ दिया। उसके दिन बहुत तकलीफ़

में बीतने लगे। जब उसको खाने पीने की भी तकलीफ़ होने लगी तब उसने एक गड़रिये के यहाँ नौकरी कर ली। वह सुबह से शाम तक उसकी भेड़ें चराता। लेकिन गड़रिया बड़ा स्वार्थी था। वह उसको भर-पेट खाने को भी नहीं देता था।

लड़का जब भूख से बहुत व्याकुल हुआ तब उसे अपना घर याद आया। बाप का प्यार याद आया। घर का सुख भी याद आया। वह सोचने लगा—यहाँ मेरा कौन है, क्यों न घर लौट चलूँ? लेकिन फिर सोचा—बाप को किस तरह अपना मुँह दिखाऊँगा? भाई मुझे देखकर क्या समझेगा? गाँव के लोग क्या कहेंगे? यह सोचकर वह चुप रह गया।

लेकिन धीरे-धीरे उसकी तन्दुरुस्ती ख़राब होने लगी और वह कमज़ोर होने लगा। शराब ने उसको बहुत कमज़ोर बना दिया था। जब उसने देखा कि यहाँ मेरी मदद करनेवाला कोई नहीं, तब उसने घर जाने का निश्चय किया। सोचा—मैं अपना क़सूर

बाप से कहूँगा और उससे माफ़ी माँगूँगा। यह सोचकर वह घर की तरफ़ रवाना हुआ।

जब बाप ने उसे आता हुआ देखा तब उसका दिल भर आया। अपने प्यारे बेटे का बुरा हाल और उसके फटे-पुराने कपड़े देखकर बाप की आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। उसने दौड़कर उसको गले लगा लिया। बेटा बहुत शर्माया। उसने सिर नीचा कर के कहा—अप्पा, मैं बड़ा पापी हूँ। मैंने तुम्हारा दिया हुआ सब धन बुरे कामों में ख़र्च कर दिया। तुम मुझे माफ़ करो।

बेटे का रोना सुनकर बाप का कलेजा टुकड़े-टुकड़े हो गया, वह उसे अपने घर ले गया और अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाये। उस दिन बाप ने एक बहुत बड़ा भोज दिया, जिसमें अपने सब मित्रों को बुलाया।

शाम को बड़ा बेटा घर लौटा। उसने छोटे भाई के आने की ख़बर सुनी तो उसको बड़ा गुस्सा आया। उसने अपने बाप से जाकर कहा—अप्पा

मैं इतने दिनों से तुम्हारे साथ रहता हूँ। लेकिन तुमने कभी कोई भोज मेरे लिए नहीं दिया। आज इस निकम्मे लड़के के लिए तुम इतना बड़ा भोज दे रहे हो। मालूम होता है कि तुम मुझसे भी बढ़कर उसको प्यार करते हो।

बाप ने अपने बड़े बेटे की पीठ पर हाथ रखकर कहा—नहीं बेटा, ऐसी बात मत कहो। मैं तुमको कम प्यार नहीं करता। तुम मेरे साथ रहते हो। मेरे पास जो कुछ है वह तुम्हारा ही है। लेकिन तुम्हारा छोटा भाई हमको छोड़कर चला गया था। वह खो गया था। वह आज फिर वापस आया है। उसने बहुत कष्ट झेले हैं; दुख भोगा है। अपनी करनी की सज़ा भोग चुका है। इसलिए उस पर कड़े मत बनो। प्यार से उसका स्वागत करो और उसकी ग़लतियों को माफ़ करो।

लोभी दादा

एक था लोभी ; पक्का लोभी ; एक नंबर का लोभी : लोभियों का सरदार लोभी ।

एक दिन उसको गरी खाने की इच्छा हुई । कहने लगा—" चलूँ, बाज़ार जाकर भाव तो पूछूँ ।"

"अरे भाई नारियालवाले, ये नारियल कैसे देते हो?"

"आइये दादा, आइये ? दो आने का एक ।"

"दो आने ! भाई, यह तो मेरी ताक़त की बात नहीं है । कहीं चार पैसे का भी नारियल मिलता है ?"

" हाँ, हाँ, ज़रा आगे चले जाओ दादा ; गाँव के बाहर बड़ी दूकान में मिलेगा ।"

"चलूँ, बड़ी दूकान तक चलूँ । पाँच मिनट का तो काम है ।"

❀ ❀ ❀

" अरे भाई नारियल कैसे देते हो ?"

"दादा, भाव क्या पूछते हो ? एक आने का एक। जितने चाहो ख़रीद लो।"

"वाह भाई, वाह ! इतनी दूर आया और फिर भी एक आना ! दो पैसे लो, दो पैसे !"

"दादा, ज़रा आगे बढ़ जाओ ; बंदरगाह तक चले जाओ । दो पैसे में मिल जायगा"

"दो पैसे क्या रास्ते में पड़े मिलते हैं ? थोड़ी दूर और चला जाऊँगा तो पैर थोड़े ही घिस जायँगे। क्यों न बन्दरगाह पर जाकर ही ख़रीदूँ ?"

❀ ❀ ❀

"अजी साहब, ये नारियल कैसे दिये, बड़े अच्छे मालूम होते हैं।"

"ले लो न, दादा ! भाव की क्या बात है। लुटा दिया है, समझिये। दो पैसे में एक !"

"अजी साहब, चलते-चलते पैरों में छाले पड़ गये। आप भी क्या बात करते हैं ? एक पैसा दूँगा—नगद एक पैसा, कहिये, मंज़ूर है ?"

"नहीं दादा, पैसे का नारियल यहाँ नहीं बिकता। पैसे का ख़रीदना हो, तो ज़रा उस बाग़ तक चले जाओ। वहाँ जितने चाहोगे, मिल जायंगे; पैसे का एक-एक!"

"इतनी दूर तो आ ही चुका हूँ; थोड़ी दूर और सही! क्यों न वहीं चला जाऊँ? अगर पैसा बचेगा, तो तीन दिन के दूध के लिए होगा। पैसा कहीं मुफ़्त तो मिलता नहीं है!"

❀ ❀ ❀

"अजी बाग़वान साहब! बड़े तक़दीरवाले हो! भाई, तुम्हारे यहाँ तो नारियल के खूब ढेर लगे हैं। कैसे देते हो ये नारियल?"

"आइये दादा, आइये! भाव क्या पूछते हैं? पैसे का एक-एक! जितने चाहें, उठा लीजिये। ये देखिये कैसे बड़े-बड़े, रावण के सिर जैसे, नारियल पड़े हैं।"

"हाय रे भगवान? इतनी दूर आकर भी पैसा देना पड़ेगा? यह तो बड़ी आफ़त है। पैर घसीटता हुआ

यहाँ तक आया; चलते-चलते जूते भी घिस गये, तो

भी एक नारियल के लिए एक पैसा देना पड़ेगा ? भाई, यह अक़्ल तो हमारे बाप-दादों ने हमें नहीं सिखायी। अजी साहब, पैसे की बात छोड़ो। ब्राह्मण के बेटे हैं; एक नारियल मुफ़्त में दे दो; खायंगे और आसीसेंगे।"

"नहीं दादा, मुफ़्त की बात मुँह से न निकालो। अगर मुफ़्त चाहते हो, तो चढ़ जाओ इस पेड़ पर और तोड़ लो, जितने चाहो, यह पैसा

तो इसी चढ़ाई और तुड़ाई का है। वन में नारियल की कौन कमी है ?"

" अच्छा, तो मैं ऊपर चढ़ जाऊँ? नारियल मुफ़्त मिलेंगे। जितने चाहूँ, उतने। तो चढ़ने दो मुझे, बस जो होगा, सो देखा जायगा।"

दादा पेड़ पर चढ़े—"ये पचीसों नारियल अभी तोड़ लेता हूँ; फिर तो मैं ही इनका मालिक हो जाऊँगा। एक पाई भी किसी को देनी न पड़ेगी। ऐसा मौक़ा फिर कब मिलनेवाला है ?"

दादा ऊपर पहुँचे। हाथ फैलाकर ज्यों ही नारियल तोड़ने लगे, त्यों ही पैर छूट गये और दादा लटक पड़े! इधर-से-उधर लगे झोंके खाने और हवा में झूलने! हाय रे भगवान्! क्या से क्या हो गया! अब जान कैसे बचेगी ?

"अजी बाग़बान साहब! बैठे क्या हो यार; जरा मदद करो न ?"

"महाराज, यह मेरा काम नहीं है। आप अपना नारियल तोडिये और ले जाइये! एक दमड़ी भी आपसे माँगूँ, तो मुझ पर थूकिये!"

दादा—"हे भगवान, अब तुम्हीं बचाओ। आज एक नारियल के लिए मेरी जान जा रही है।"